Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

सवरा (सौरा) जनजाति में विजय दिवस : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष सन्दर्भ में

छन्नू कुमार मेरावी* डॉ. हेमलता बोरकर वासनिक**

*** शोधार्थी, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) भारत**
**** शोध निर्देशक, प्राध्यापक समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) भारत**

शोध सारांश – सवरा जनजाति छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजातियो मे से एक है। छत्तीसगढ़ के संदर्भ में सवरा जनजाति विशेष रूप से कबीरधाम,महासमुंद बिलासपुर, लोरमी, बेमेतरा, सारंगढ़ बिलाईगढ़, जांजगीरचाम्पा, सक्ती, रायगढ़, जशपुरसरगुजा, धमतरी, जगदलपुर, गरियाबंद, बीजापुर, दंतेवाड़ा, कोंडागांव, दुर्ग, रायपुर, बलौदाबाजार, राजनांदगाव आदि जिलों में निवास करती है।

सवरा जनजाति शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रो मे निवासरत हैं। आज सवरा समाज जिस आरक्षण का लाभ ले रहे हैं उसकी मुख्य आधार 'रास्ता रोको जन आन्दोलन' है, यह आन्दोलन सवरा जनजाति को आरक्षण से वंचित करने के कारण हुआ था। प्रारंभ मे सवरा समाज की पुराने रिकार्ड जैसे मिशल बंदोबस्त और दाखिल खारिज पंजी मे सौंरा, सौरा, संवरा, सवारा और सउरीन आदि लिखा गया था। इस तरह राजपत्र एवं वर्ष 1950 पूर्व अभिलेखों मे अक्षर समानता न होने के कारण शासन के संवैधानिक अधिकार से वंचित कर दिए गए जिसके कारण सवरा समाज ने 1 नवम्बर 2017 को अपने संवैधानिक अधिकार पाने के लिए रास्ता रोको जन आन्दोलन किये जिसके परिणाम स्वरुप वर्ष 2002-03 छत्तीसगढ़ राजपत्र मे अनुसूचित जनजाति वर्ग के कुल 43 जनजाति को मान्यता दिया गया जिसमे क्रमांक 41 मे सवर,सवरा अंकित था। उसी दिन से सवरा समाज द्वारा 1 नवम्बर को प्रतिवर्ष विजय दिवस के रूप मे मनाया जाता हैं। यह विजय दिवस समाज को अपने संवैधानिक अधिकार के प्रति जागरूकता का याद दिलाता हैं।

शब्द कुंजी– सवरा जनजाति, विजय दिवस, रास्ता रोको जन आन्दोलन, समाजशास्त्रीय विश्लेषण, छ.ग.।

प्रस्तावना

सवरा जनजाति का ऐतिहासिक परिचय– सवरा जनजाति भारत की प्राचीन आदिवासी जनजातियों में से एक मानी जाती है। इनका मुख्य निवास छत्तीसगढ़, ओडिशा और आंध्र प्रदेश के वन एवं पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है। छत्तीसगढ़ के संदर्भ में सवरा जनजाति विशेष रूप से कबीरधाम,महासमुंद बिलासपुर,लोरमी,बेमेतरा,सारंगढ़ बिलाईगढ़, जांजगीर चाम्पा, सक्ती, रायगढ़, जशपुरसरगुजा, धमतरी, जगदलपुर, गरियाबंद, बीजापुर, दंतेवाड़ा, कोंडागांव, दुर्ग, रायपुर, बलौदाबाजार, राजनांदगाव आदि जिलों में निवास करती है।

सवरा जनजाति को भारतीय उपमहाद्वीप की अत्यंत प्राचीन जनजातियों में गिना जाता है। कई इतिहासकार इन्हें द्रविड़ अथवा ऑस्ट्रो-एशियाटिक समूह से जोड़ते हैं। प्राचीन संस्कृत ग्रंथों, रामायण और महाभारत में भी 'शबर' अथवा 'सवरा' नाम का उल्लेख मिलता है।

सवरा जनजाति प्रकृति पूजक होती है। वे पहाड़, नदी, जंगल, सूर्य,जिव जंतुओं और पूर्वजों की पूजा करते हैं। इनके प्रमुख देवी-देवताओं में ग्राम देवता और प्रकृति शक्तियाँ शामिल हैं। सवरा जनजाति में विभिन्न गोत्र पाए जाते हैं, जैसे नाग, बाघ, भैंसा वन गोला,गिरेलफुल,लोमड़ी आदि इस प्रकार इस जनजाति में कुल 80 गोत्र पाए जाते है। विवाह सामान्यत: गोत्र के बाहर किया जाता है।

परंपरागत रूप से सवरा जनजाति-झूम कृषि (स्थानांतरित खेती) वनोपज संग्रह शिकार पशुपालन पर निर्भर रही है। वर्तमान समय में कई सवरा परिवार स्थायी कृषि और मजदूरी से भी जुड़े हैं।सवरा जनजाति छत्तीसगढ़ की प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण भाग है। इनका इतिहास प्रकृति, परंपरा और सामुदायिक जीवन से जुड़ा हुआ है। आधुनिकता के प्रभाव के बावजूद यह जनजाति अपनी सांस्कृतिक पहचान, लोककला और पारंपरिक जीवन मूल्यों को आज भी संरक्षित किए हुए है।

शोध साहित्य की समीक्षा –अध्ययन विषय का प्रस्तुतीकरण करने के लिए शोध साहित्य का उल्लेख किया जा रहा है जो इस प्रकार है-

सबर कुमार भुबन (2023)ओडिशा के रायगड़ा जिले की दो ग्राम पंचायतों - सगड़ा और पुट्टासिंग - में किए गए गहन क्षेत्र सर्वेक्षणों के माध्यम से पहाड़ी सवरा जनजाति की उत्पत्ति, संस्कृति और रिश्तेदारी संरचना का अध्ययन किया गया है। पहाड़ी, जिन्हें लोकप्रिय रूप से लांजियासवरा के नाम से जाना जाता है, दक्षिण ओडिशा के पूर्वी घाट क्षेत्रों की वन-आच्छादित ऊँची पहाड़ियों में निवास करते हैं। पहाड़ी सवरा जनजाति की नस्लीय समानता प्रोटो-ऑस्ट्रलॉइड समूह से है, जबकि भाषाई समानता ऑस्ट्रो-एशियाई मुंडारी समूह से है। यह अध्ययन सवरा जनजाति की शारीरिक विशेषताओं, पहनावे और आभूषणों के पैटर्न, कला और शिल्प को दर्शाता है। अध्ययन से जनजाति की पूर्वजों की पूजा में गहरी आस्था और शमन/शमनी की भूमिका का पता चलता है, जो देवता और बीमार व्यक्ति के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं और सभी प्रकार के अनुष्ठानों में देवी-देवताओं के दूत के रूप में भी कार्य करते हैं। सवरा जनजाति की सबसे विशिष्ट विशेषताओं में से एक यह है कि यह गोत्रहीन है और इसका

कोई टोटेम नहीं है। इस जनजाति में केवल बिरिंदा नामक वंश परंपराएँ हैं, जो घनिष्ठ समूह के लिए एक स्थानीय शब्द है और साओरा जनजाति के समूह के नाम के रूप में सबसे उपयुक्त है। पितृवंश, जो साओरा जनजाति के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत का सार है, को 'खेजा' कहा जाता है, जिसे 'पुंजा' या 'शीशा' के नाम से भी जाना जाता है। बिरिंदा के बाद, दूसरा महत्वपूर्ण रिश्तेदार वर्ग 'कुलम' है, जो सवरा जनजाति में वैवाहिक रिश्तेदारों के लिए प्रयुक्त विशिष्ट शब्द है। सवरा समाज की तीसरी महत्वपूर्ण संरचना, अनसीर या अंतेरा, एक स्वदेशी श्रम सहकारी समिति है और सवरा जनजाति की आवश्यकताओं के अनुसार गठित की जाती है। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि सवरा जनजाति, समय के साथ बदलती आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों से प्रभावित होने के बावजूद, अपनी पारंपरिक संस्कृति को बनाए रखती है।

प्रधान अशोक एवं मंजुला गुहा (2000) यह शोधपत्र छत्तीसगढ़ की सवरा जनजाति की महिलाओं में मासिक धर्म की शुरुआत की आयु, रजोनिवृत्ति की आयु और प्रजनन आयु पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है। छत्तीसगढ़ के 21 गांवों की सावरा महिलाओं में इन जनसांख्यिकीय विशेषताओं का अध्ययन किया गया है। मासिक धर्म की शुरुआत की आयु के अध्ययन के लिए 622 महिलाओं और रजोनिवृत्ति की आयु के अध्ययन के लिए 121 महिलाओं से डेटा एकत्र किया गया था। मासिक धर्म की शुरुआत की औसत आयु 12.96±0.049 वर्ष और रजोनिवृत्ति की औसत आयु 45.22±0.101 वर्ष अनुमानित की गई है। प्रजनन आयु की औसत अवधि 32.48±0.13 वर्ष आंकी गई है। वर्तमान आंकड़ों की तुलना कुछ भारतीय जनसंख्या से की गई है।

सरज गनाना (2019) सवरा जनजाति मुख्य रूप से दक्षिणी ओडिशा और उत्तारी तटीय आंध्र प्रदेश में पाई जाती है।2011 की जनगणना के अनुसार, सावर जनजाति, जिनकी संख्या 1,37,613 (5.23%) है, राज्य की सबसे अधिक आबादी वाली जनजातियों में से एक है।वे ओडिशा के रायगड़ा जिले और कोरापुर और गजपति जिलों के कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में भी एक प्रमुख जनजातीय समुदाय हैं।आंध्र प्रदेश में वे मुख्य रूप से श्रीकाकुलम, विजयनगरम और विशाखापत्तनम जिलों की सुरम्य पालकोंडा पहाड़ी श्रृंखलाओं (पूर्वी घाटों का हिस्सा) में पाए जाते हैं।

बी.ठ्ठी शर्मा (2018) यह शोधपत्र उन परिस्थितियों का विश्लेषण करने का प्रयास करता है जिनके अंतर्गत भारत के पूर्वी घाट में निवास करने वाली और राज्य द्वारा विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PvTG) के रूप में मान्यता प्राप्त सवरा जनजाति में परिवार, विवाह और रिश्तेदारी की संस्थाओं में परिवर्तन हुए हैं। सवारा जनजाति, जो नाम वाले वंशों या कुलों के अभाव के लिए जानी जाती है, ने पड़ोसी जटापु समुदाय के वंश पैटर्न को अपना लिया है और इसे एक महत्वपूर्ण परिवर्तन माना जाता है। इस परिवर्तन पर जनजाति के भाषा और आर्थिक एकीकरण के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। यह तर्क दिया गया है कि विवाह योग्य और विवाह अयोग्य रिश्तेदारों की पहचान करने वाली रिश्तेदारी शब्दावली परिवर्तित परिदृश्य में पर्याप्त नहीं थी और इसलिए नाम वाले वंशों को अपनाना आवश्यक हो गया। विवाह पैटर्न में परिवर्तन के संबंध में, यह शोधपत्र विशेष रूप से पुरुषों और महिलाओं के बीच क्रमिक एकविवाह के बढ़ते चलन के प्रश्न पर चर्चा करता है और अब इसे बहुविवाह के विरुद्ध महिलाओं के विरोध के रूप में देखा जाता है। समाज जिन मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित है, उनमें होने वाले परिवर्तन,विशेष रूप से परिवार, विवाह और रिश्तेदारी के पहलुओं में,पकड़ना कठिन है

टी. मधु सुधाना राव (2017) प्रस्तुत अध्ययन भारत की सवरा जनजाति (प्राइवेट ग्रुप) की संस्कृति और समाज के विभिन्न पहलुओं पर नृवंशविज्ञान विश्लेषण का अध्ययन करने का एक प्रयास है।सवरा शब्द के दो अर्थ प्रतीत होते हैं,एक जो कुल्हाड़ी के लिए सिथियन शब्द सागरी से लिया गया है,और दूसरा शव ढोने के लिए इस्तेमाल होने वाले संस्कृत शब्द सबा रोये से।ये दोनों ही अर्थ उनके कंधे पर कुल्हाड़ी रखने की आदत और शिकार करने तथा शिकार से प्राप्त वस्तुओं पर जीवन यापन करने के उनके आदिम व्यवसाय से मेल खाते हैं।सवारा भारत की सबसे आदिम जनजातियों में से एक हैं।लगभग 8.6 लाख की संख्या वाली सवारा जनजाति देश की सबसे अधिक आबादी वाली जनजातियों में से एक है।ओडिशा में इनकी संख्या 5.34 लाख है औरये 13 जिलों में वितरित हैं।

हिल साओरा का नस्लीय रिश्ता प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड ग्रुप से है, जबकि भाषा का रिश्ता ऑस्ट्रो-एशियाटिक मुंडारी ग्रुप से जुड़ा है। साओरा जनजाति की एक कल्चरल ग्रुप के तौर पर अपनी खासियतें हैं और वे पीढ़ियों तक एक साथ सोशल नेटवर्क बनाने की सोच रखते हैं। उन्हें जो परंपराएं विरासत में मिली हैं और सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांतों को बनाए रखने में उनकी जो खासियत है, वह ('साओरा') जनजाति के आर्थिक और राजनीतिक संगठनों में दिखती है। हालांकि साओरा का रिश्ता दूसरी उड़ीसा जनजातियों की तरह पितृवंशीय है, लेकिन दूसरों की तरह इसमें कबीले के संगठन का कोई सिस्टम नहीं है। साओरा के सिर्फ बिरिंडा नाम के वंश हैं, जो करीबी ग्रुप (खेजा) के लिए एक लोकल मतलब है और साओरा जनजाति के टाइटल ग्रुप के तौर पर सबसे अच्छा काम करता है। पितृवंश, जो 'साओरा' जनजाति के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत का सार है, उसे 'खेजा' कहा जाता है, जिसे वैकल्पिक रूप से ष्पुंजाष या 'शिशा' के रूप में जाना जाता है। दूसरी महत्वपूर्ण रिश्तेदार श्रेणी 'कुलम' है, जो ष्साओराष का विशिष्ट शब्द है जिसका उपयोग सगे रिश्तेदारों के लिए किया जाता है। साओरा समाज की तीसरी महत्वपूर्ण संरचना अंसेर या अंतरा स्वदेशी प्रकृति का श्रम सहकारी है। वर्षों के अभाव (आर्थिक) ने उन्हें बदलने और ईसाई धर्म को अपनाने, मजदूर के रूप में अन्य राज्यों में पलायन जैसे कुछ विकल्प खोजने के लिए मजबूर किया। हालाँकि, 'साओरा' अभी भी समाज की अपनी पारंपरिक संरचना को बनाए हुए हैं।

उद्देश्य – (सवरा सौरा) जनजाति की विजय दिवस का अध्ययन करना।

शोध प्रारूप – विवरणात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध प्रारूप।

अध्ययन पद्धति – प्रस्तुत शोध पत्र अनुभव जन्य तथ्यों पर आधारित हैं। यह शोध पत्र छत्तीसगढ़ के सवरा जनजाति पर केन्द्रित हैं। ये जनजाति मुख्य रूप से महासमुंद,कबीरधाम,बिलासपुर और बेमेतरा जिले मे निवास करते हैं। इस अध्ययन मे महासमुंद और कबीरधाम जिले से 822 परिवार का 50 प्रतिशत अर्थात 411 परिवार का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन द्वारा किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र पूर्णत: गुणात्मक शोध पर केन्द्रित है जिसके अन्तर्गत सवरा जनजाति मे प्रचलित मान्यताओ का समाजशास्त्रीय एवं नृजातीय प्रस्तुतीकरण किया गया है।

सवरा(सौरा) जनजातिमें विजय दिवस की मान्यताएं – 1 नवम्बर सन 2000 को मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ अलग राज्य हुआ, वर्ष 2002-03 छत्तीसगढ़ राजपत्र अनुसुचित जनजाति वर्ग कुल 43 अंकित हुआ जिसमें

क्रमांक 41 में सवर–सवरा अंकित था। हमारे पूर्व 1950 के पूर्व अभिलेख मिशल बंदोबस्त, दाखिल खारिज पंजी में सौंरा, सौरा संवरा सहरा सवारा सउरिन लिखा हुआ है। राजपत्र एवं वर्ष 1950 के पूर्व के अभिलेखों में अक्षर समानता न होने के कारण सवरा समाज को अनुसुचित जनजाति से जाति प्रमाण पत्रजारी नही किया गया एवं शासन के संवैधानिक अधिकार से वंचित कर दिया। सवरा जनजाति समुदाय द्वारा नायब तहसीलदार से लेकर राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार तक विधि अनुसार आवेदन प्रस्तुत किये किन्तु कहीं भी सुनवाई नहीं हुई इस कारण हम सवरा समाज क्षुब्द होकर एवमं विवश होकर 01 नवम्बर 2017को राज्य उत्सव को वहिष्कार करते हुये समाज के छात्र, छात्रा युवक युवती,वृद्ध एवमं बच्चे मिलकर 60000–70,000 व्यक्ति उपस्थित होकर जान को जोखिम में रखकर एक बहुत बड़ा रास्ता रोको जन आंदोलन किये जिसमे विपक्ष में रहकर माननीय भूपेश बघेल जीने आन्दोलन में पहुँचकर सवरा समाज के मांग को समर्थन दिया। आंदोलन की जानकारी राज्य सरकार केन्द्र सरकार को भी हो गया तब डॉ रमन सिंह की सरकार दिनांक 30/12/2017 को सवरा जाति के अलावा 22 अनुसुचित जनजाति तथा 05 अनुसुचित जाति को मात्रात्मक त्रुटि, शब्द विभेद, लेखन त्रुटि माना और इन जाति वर्ग के व्यक्तियोको पूर्व अभिलेख 1950 के पूर्व में अंकित वही जाति हैं जो मात्रात्मक त्रुटि लेखन त्रुटि माना और इन्हें राजपत्र में अंकित अनुसार जाति प्रमाण पत्रजारी करते तथा संवैधानिक अधिकार आदेश दिया, इस कारण सवर,सवरा समाज वर्ष 1 नवम्बर 2017 से 1 नवम्बर को यादगार विजय दिवस के नाम से मनाते आ रहे हैं।1 नवम्बर 2025 को हमारी सवरा समाज द्वारा 5000 हजार के संख्या में महिला पुरुष युवक युवती वृद्ध उपस्थित होकर सरायपाली के एम.एच. 53 से लगे माँ घंटेश्वरी मंदिर मे उपस्थित होकर मां घंटेश्वरी माता को हमारे बैगा पुजारियों द्वारा नियमित पुजा कर, करमा नृत्य बाजे गाजे के साथ शांति रैली निकाल कर नई मण्डी सरायपाली प्रागण मे पहुंच कर,माँ शबरी की पुजा आराधना कर माँ शबरी के प्रसाद ग्रहण कर सभा हुआ। सभा में अतिथियों को पीली अक्षत चांवल एव नव वस्त्र से परिधान किया गया जिसमे समाज के प्रमुखों ने समाज को एकत्रित संकलित एवं संगठीत रहने को कहकर बिजय दिवस केसाथ दिपावली मिलन की शुभकामना देते हुव कार्यक्रम का समापन हुआ।

निष्कर्ष – विजय दिवस शब्द जैसे की नाम से ही किसी का जीत को दर्शाता है वैसे ही ये 1 नवम्बर सवरा जनजाति की वीरगाथा का परिचय देता है यह एक इस जनजाति की मुख्य समस्या का समाधान करता है पूर्व मे ये जनजाति आरक्षण से वंचित था और वंचित होने का मुख्य कारण शासकीय दस्तावेजों मे शब्द त्रुटि, लेखन त्रुटि ठस जिसके कारण 1950 के पूर्व अभिलेखों मे अक्षर समानता नहीं था जिस कारण से इस जनजाति को आरक्षण से वंचित कर दिया गया था जिसके कारण यह समाज आरक्षण से मिलाने वाले सरे सुविधा का लाभ नहीं ले पा रहा था जिसके कारण इस समाज ने सभी लोगो को एकत्रित करके संगठित किया और उसके बाद फिर 1 नवम्बर वर्ष 2017 एक बहुत बड़ा रास्ता रोकों जन आन्दोलन किये जिसके परिणाम स्वरुप राज्य सरकार और केंद्र सरकार तक इनके समस्या पंहुचा और इसका समाधान करते हुए राज्य सरकार सवरा जनजाति के आलावा 22 अनुसूचित जनजाति एवं 05 अनुसूचित जाति को लेखन त्रुटि और मात्रात्मक त्रुटि माना और इन्हे राजपत्र मे अंकित अनुसार जाति प्रमाण पत्र जारी का संवैधानिक अधिकार दिया गया इस कारण से सवर सवरा समाज 1 नवम्बर 2017 से लेकर आज तक प्रतिवर्ष 1 नवम्बर को विजय दिवस के रूप मे मानते आ रहे है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Sabar Kumar Bhuban (2023) A Case Study on the Marriage System of the Saura Tribe of Rayagada District of Odisha International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR) E-ISSN: 2582-2160 Website: www.ijfmr.com Email: editor@ijfmr.com Pp 1-6
2. A Pradhan, M Guha (2000)Reproductive Age Span Among The SawaraTribal Temates Of Chhattisgarh-Journal of Ravishankar University, - jru-b.com Pp1-10
3. SRAJ GNANA (2019)Empowerment of Savara Tribal Women among the Marginalized communities of India: An Ethnographic profileIJMSSSR VOLUME 1 Pp 1-2
4. BV Sharma (2018) The Context of Changes in Family, Marriage and Kinship among the Savara of Andhra Pradesh - The Eastern Anthropolgist,academia.edu Pp 242-243
5. T Madhu Sudhanarao (2017)Ethnography of EasternGhat Savara Primitive Tribal Group of India Imperial Journal of Interdisciplinary researchgate.n Pp 559-560
6. Dr. Meera Swain Origin, Culture And Kinship Structure Of Hill SaoraSwainhttp://etribaltribune.com/ pp 1

****